रिकार्ड–यह वक्त (जा) रहा है.....ओमशांति प्रातःक्लास 13.1.67
मीठे2 सिकीलधे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रुहानी बच्चों ने इस गीत का अर्थ समझा।नम्बरवार किसलिए कहते हैं?कोई तो फर्स्ट ग्रेड में समझते हैं, कोई सेकिंड ग्रेड में ,कोई थर्ड में समझते हैं।समझ भी हर एक की अपनी2 है।निश्चयबुद्धि भी सबकी अपनी2 है।बाप तो समझाते रहते हैं।ऐसे ही समझो शिवबाबा इन द्वारा डायरैक्शन्स दे रहे हैं।तुम आधा कल्प आसुरी डायरैक्शन्स पर चलते आये हो।अभी ऐसे निश्चय करो तो कि हम ईश्वरीय डायरैक्शन्स पर चल रहे हैं तो बेड़ा पार हो सकता है।अगर ईश्वरीय डायरैक्शन नहीं समझा, मनुष्य के डायरैक्शन समझते हैं तो मूंझ मरेंगे।बाप कहते हें मेरे डायरैक्शन पर चलने से फिर मैं रेस्पांसिबुल हूँ।इन द्वारा जो कुछ होता है इनकी एक्टिविटी का मैं रेस्पांसिबुल हूँ।इसका हम राइट कर देंगे।तुम सिर्फ हमारे डायरैक्शन पर चलो।जो अच्छी रीति याद करेंगे वो ही डायरैक्शन पर चलेंगे।जो याद ही नहीं करते हैं तो वो सिर्फ आसुरी डायरैक्शन पर चलते हैं।तुम बच्चे भी समझते हो अभी हम कलियुग में आसुरी डायरैक्शन पर थे।अभी हम ईश्वरीय डायरैक्शन पर हैं।गोया हम संगम पर हैं।कदम2 पर ईश्वरीय डायरैक्शन पर चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा।निश्चय में ही विजय है।बहुत बच्चे इन बातों को समझते नहीं हैं।थोड़ा ही ज्ञान आने से देहअभिमान आ जाता है।योग बहुत ही कम है।ज्ञान तो सहज है हिस्ट्री–जॉग्राफी को जानना।यहां तो मनुष्य कितनी साइंस आदि पढ़ते हैं।कमाल है।तो यह पढ़ाई बहुत सहज है।मेहनत है याद की।कोई कहे बाबा हम योग में बड़े मस्त रहते हैं।बाबा मानेंगे ही नहीं।बाबा हरेक की एक्टिविटी को देखते हैं।बाप को याद करने वाले तो.....खिले हुये होंगे।याद नहीं करते हैं इसीलिए तो उल्टा–सुल्टा काम होता ही रहता है।बहुत रात–दिन का (फर्क) है।अभी तुम इस सीढ़ी चित्र पर अच्छी रीति समझा सकते हो।यह इस समय है कांटों का जंगल।यह बगीचा नहीं है।जंगल है।जंगल में आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं।यह हैं सब जंगली बंदर।बंदरों में से भी बहुत किस्म होती है ना।एप्स बंदर जंगल में रहते हैं।मनुष्यों को भी एप्स का टाइटल दिया हुआ है।सन्यासी भी (जाकर) जंगल में रहते हैं।वो हैं बड़े एप्स।बाप को जानते नहीं है।मनुष्य अगर अपनी आत्मा और बाप को भी ना जाने तो एप्स से भी बदतर ठहरा ना।तुम्हारे में से भी बहुत थोड़े हैं अपने का यथार्थ रीति जानें और यथार्थ रीति बाप को याद करते हों।बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ ऐसा समझकर मुझे याद करें यह बहुत मुश्किल है।बंदर सम्प्रदाय तो बरोबर हैं ना।राम कहा जाता है बाप को।तुम भी बंदर थे।अब तुमको मंदिर लायक बनाकर सारे वर्ल्ड को रावणराज्य से छुड़ाते हैं।कितनी समझने की बाते हैं।यह तो क्लीयर समझाना चाहिए कि भारत फूलों का बगीचा था।वैकुण्ठ में क्या जंगली बंदर रहते हैं क्या?वहां तो देवी देवतायें रहते हैं।यहां तो देखो मनुष्य बंदर से भी बदतर हैं।बुद्धि में आता है यह तो बंदर ही बंदर हैं।कहां चलें?ऐसे बंदरों से हम बात नहीं कर सकते हैं।यह तो तुम्हारा काम है समझाना।मुझे क्या दरकार पड़ी है मिलने की?बच्चों में बड़ी युक्ति चाहिए।जबकि इतनी ब्रह्माकुमार कुमारियां बैठे हैं तो बाबा बाहर वालों से क्यों मिलें?बाप तो है हाइयेस्ट अथार्टी।प्रजापिता ब्रह्मा भी है हाइयेस्ट अथार्टी।यह दोनों हैं सबसे बड़ी अथार्टी।शिव और प्रजापिता ब्रह्मा।आत्मायें हैं शिवबाबा के बच्चे और साकार में हम भाई–बहनें सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे।यह है सभी का ग्रेट2 गैण्ड फादर।ऐसी हाइयेस्ट अथार्टी के लिए हमको मकान चाहिए।ऐसे तुम लिखो।फिर देखो बंदरों की बुद्धि में कुछ आता है।शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा।आत्माओं का बाप और सभी मनुष्य मात्र का बाप।यह प्वाइंट्स बहुत अच्छी है समझाने की; परंतु बच्चे पूरी रीत समझते नहीं हैं।भूल जाते हैं।बस ज्ञान की खुमारी चढ़ जाती है जैसे कि बापदादा भी जीत पा ली है।यह दादा कहते हैं मेरी भले नहीं सुनो।हमेशा समझो शिवबाबा समझाते हैं उनकी मत पर चलो।डायरैक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह करो।रेस्पांसिबुल हम हैं।ईश्वरीय बुद्धि पर चलो।यह कोई ईश्वर थोड़े ही है।तुमको ईश्वर से पढ़ना है ना।हमेशा समझो यह डायरैक्शन हमको शिवबाबा दे रहे हैं।जब तक यह नहीं समझते हैं

तब तक ऐप्स की निशानी रहेगी।लम्बी पूंछ, छोटी पूंछ रहेगी।बाप कहते हैं पूंछ निकल जानी चाहिए।समझो शिवबाबा ही हमको समझाते हैं।तो यह है कांटों का जंगल जिसमें ह्यूमन जनावर रहते हैं।मनुष्य ही बंदरों मिसल हैं ना।शक्ल तो मनुष्य की ही है।यह ल.ना. भारत के मनुष्य थे।फिर इनको क्यों नमस्ते करते हैं?पूजते हैं?तुम कह सकते हो यह शिवालय के रहने वाले हैं।तुम हो वैश्यालय के रहने वाले।इसमें डरने की कोई बात नहीं हैं।बहुत बच्चे हैं जिनको अपना नशा चढ़ा रहता है।डिफेक्ट तो बहुतों में हैं ना।जब पूरा योग हो तब विकर्म विनाश हों।विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है।बाबा देखते रहते हैं कि कैसे माया एकदम नाक से पकड़कर गटर में गिरा देती है।बाप की याद में तो बड़ी खुशी में प्रफुल्ल रहना चाहिए।सामने एमऑब्जेक्ट खड़ा है।हम यह बन रहे हैं।भूल जाने से खुशी का पारा नहीं चढ़ता है।कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ।बाहर में हम याद नहीं कर सकते हैं इसलिए .....यहां नाक से पकड़कर नेष्ठा कराई जाती है क्या?याद में नहीं रहते हैं इसलिए बाबा भी कहीं2 प्रोग्राम भेज देते हैं ;परंतु याद में बैठते थोड़े ही हैं।बुद्धि इधर–उधर भटकती रहती है।बाबा अपनी मिसाल बताते हैं कि ये नारायण का कितना पक्का भक्त था।जहां–तहां साथ में नारायण का चित्र रहता था।फिर भी पूजा के समय बुद्धि इधर–उधर भागती थी।इसमें भी ऐसे ही होता है।बाप कहते हें चलते–फिरते बाप को याद करो।बैठने की आदत नहीं डालो।नहीं तो सारे दिन में याद नहीं रहेगा।कहते हैं बहन नेष्ठा कराये।नेष्ठा का तो कोई अर्थ ही नहीं है।बाबा हमेशा कहते हैं याद में रहो।एक जगह बैठकर याद करने की हेर नहीं होनी चाहिए।जो बाबा को कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ बिल्कुल ..... हैं।कोई2 ब्राह्मणी हेड डाल देती है तो घड़ी2 कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ।नेष्ठा में बैठे2 ध्यान में चले जाते हैं।ना तो ज्ञान ,ना याद रहती है या तो झुटके खाने लग पड़ते हैं।बहुतों को टेव पड़ गई है।यह तो अल्पकाल की शांति हो गई।गोया बाकी सारा दिन अशांति में रहते हैं।चलते–फिरते बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा?आधा कल्प का बोझा है।इसमें ही बड़ी मेहनत है।अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना।.भले बाबा को बहुत लिख भेजते हैं इतना समय याद में रहते हैं;परंतु रहते नहीं हैं।चार्ट को समझते नहीं हैं।बाबा बेहद का बाप है ,पतित–पावन है।खुशी में रहना चाहिए।ऐसे नहीं कि हम तो शिवबाबा के हैं ना।याद बिल्कुल करते नहीं हैं।अगर याद करते होते (फिर) तो पहले नम्बर में आ जाना चाहिए।किसी को समझाने की भी बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए।हम तो भारत की महिमा करते हैं।नई दुनियां में आदि सनातन देवी देवताओं का राज्य था।अब है पुरानी दुनियां का आयरन एज।वो सुखधाम।यह है दुःखधाम।भारत गोल्डन एज था।कुछ भी समझते नहीं हैं।जैसे कि ऐप्स हैं।गोहत्या के लिए कितना करते हैं।उनको भी लिखना चाहिए कि तुम यह क्या करते हो।श्री श्री 108जगतगुरू कहलाते हो।तुम्हारा काम है मनुष्यों को सदगति देना।तुम जानवरों पिछाड़ी क्यों जाकर पड़े हो?क्या तुम जानवरों के गुरू हो?फिर तुम्हारे फालोवर्स का कौन उद्धार करेंगे?यह बातें और तो कोई पूछ नहीं सकते हैं।तुम पूछो युक्ति से।यह नालेज बड़ी वंडरफुल है।जिसकी (तकदीर) में जो है ,जो जितना पुरुषार्थ करते हैं।वो खुद थोड़े ही समझते हैं कि हम ऐप्स हैं।तुम एक्टिविटी से जानते हो।हैं तो कलियुगी भी मनुष्य,सतयुगी भी मनुष्य।फिर उनके आगे जाकर माथा क्यों टेकते हैं?उनको स्वर्ग का मालिक कहते हैं ना।कोई मरते हैं तो कह देते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ।यह भी नहीं समझते हैं कि इस समय तो सब नर्कवासी हैं।तो जरूर पुनर्जन्म भी यहां ही लेंगे।बड़े2 विद्वान, आचार्य आदि कुछ नहीं जानते हैं।तुम्हारे में भी जो बहुत तीखे हैं वो समझ सकते हैं।बाबा हर एक की चलन से देखते रहते हैं।बाबा को बहुत साधारण रीत से कोई2 से बात करनी पड़ती है।सम्भालना पड़ता है।नहीं तो यह बाबा ऐसी जगह पर बैठ

जायें जहां ऐप्स देख भी नहीं सकें ;परंतु बाबा कहते हैं मुझे ऐप्स को ही मंदिर लायक बनाना है।तो जरूर ऐप्स देखने पड़ेंगे।बिगर देखे कैसे समझावेंगे।बाप भी ऐप्स में ही प्रवेश करते हैं।जो नम्बरवन मंदिर लायक बनते हैं।तुम जानते हो एक जंगल के ऐप्स में आकर बाप प्रवेश करते हैं।5विकार तो सबको ही है।है ही रावणराज्य।तो यह (भी) बंदर थे ना।मनुष्य यह समझते नहीं हैं कि हम राक्षस, आसुरी सम्प्रदाय हैं।जिन्हों में ज्ञान की धारणा नहीं होती है वो आसुरी सम्प्रदाय हैं।कोई आपस में लड़ते हैं तो कहा जाता है कि यह तो भोकते रहते हैं।एक–दो को गाली देते रहते हैं।बाप बच्चों को कह देते उल्लू का बच्चा।शरुड़ बच्चे जो होते हैं वो कहते हैं अरे, आप अपने को उल्लू क्यों कहते हैं?उल्लू का बच्चा कहने से तुम भी उल्लू बन जाते हो।ऐसे बात करने की होशियारी अभी बाप सिखाते हैं।मनुष्य तो कुछ नहीं समझते हैं।भारत क्या था और क्या बन गया है।भिखारी कहा जाता है तो गुर–गुर करते हैं।अरे, यह तो गवर्मेंट के पेपर में ही निकला है ;परंतु आजकल के जंगली ऐप्स समझते थोड़े ही हैं।घोर जंगल में जनावर ही रहते हैं।सतयुग को कहा जाता है फूलों का गार्डन।अभी है कांटों का जंगल।जंगली जनावर कांटें बहुत हैं।बाप कितना क्लीयर कर....समझाते हैं।समझते भी हैं बात तो बड़ी ठीक है।फिर भी क्यों बड़े2 कांटे बन जाते हैं।एक–दो को दुःख देने से कांटे बन जाते हैं।आदत छोड़ते ही नहीं हैं।अभी बागवान माली फूल लगाते हैं।कांटों को फूल बनाते रहते हैं।उनका धंधा ही यह है।जो खुद ही कांटे होंगे तो वो फूल कैसे बनावेंगे?प्रदर्शनी में भी बड़ी खबरदारी से किसी को भेजना होता है।जो के अच्छे ज्ञानवान हैं।तुम तो एक्युरेट समझते हो।इसमें इन्सल्ट की तो कोई बात ही नहीं है।आपस में सब लड़ते–झगड़ते रहते हैं तो सब जनावर ठहरे ना।सतयुग में यह लक्ष्मी–नारायण थोड़े ही लड़ेंगे।जो फूल थे वो फिर कांटे बन जाते हैं।कांटे फिर फूल की पूजा करते हैं।बाप कितनी अच्छी रीत समझाते रहते हैं।अब शिवजयंती भी आती है।तुम प्रदर्शनी जास्ती करते रहो।छोटी2 प्रदर्शनी पर भी बैठ समझाओ।एक सेकेंड में वैकुंठ के मालिक बनो अथवा पतित, भ्रष्टाचारी से पावन श्रेष्ठाचारी बनो।एक सेकेंड में जीवनमुक्ति प्राप्त करो।जीवनमुक्ति का भी अर्थ समझते नहीं हैं।तुम भी अभी समझते हो।बाप द्वारा सबको जीवनमुक्ति मिलती है ;परंतु ड्रामा को भी जानना है।सभी धर्म स्वर्ग में नहीं आवेंगे।वो फिर अपने2 सैक्शन में चले जावेंगे।फिर अपने2 समय पर आकर धर्म स्थापन करेंगे।झाड़ में कितना क्लीयर है।सदगति दाता।सदगति दाता गुरू एक के सिवाय कोई हो नहीं सकता है।बाकी भक्ति सिखाने वाले तो ढेर गुरू हैं।सदगति के लिए मनुष्य गुरू हो नहीं सकते हैं।श्री2 108जगतगुरू कहलाने वाले यह सब भक्तिमार्ग के ऐप्स हैं।किस्म2 के बंदर होते हैं।बड़े2 ऐप्स बहुत खौफनाक होते हैं।मनुष्य पहचान से भी वो तीखे होते हैं।श्री2 108जगतगुरू कहलाने वाले हरण्याकश्यप हैं।अभी उनका सारा पोल पधरा होगा।जगतगुरू के तो काम है सदगति का रास्ता बताना या कि हड़ताल कर जीवघात महापापी बनना।पत्र लिखा है तो भी समझते नहीं हैं।बड़े ऐप्स हैं ना।प्रजा का प्रजा पर राज्य है।समझते नहीं।देहली में एक को समझाने गये तो वो कहने लगा हम समझना चाहते (नहीं) हैं।क्या तुम हमको कनवर्ट करना चाहते हो?हम बंदर से मनुष्य थोड़े ही बनेंगे।यह खयाल ही नहीं करो।हम कभी देवता नहीं बनेंगे।बहुत समझाया।अरे, हम आपको बंदर से मंदिर लायक बनाते हैं।तुम बिगड़ते क्यों हो?बाप कहते हैं यह है ही बंदरों की दुनियां।इसमें कदम2 पर बंदर हैं।कोई तो बड़े कड़े होते हैं।लड़ने पर भी देरी नहीं करें।प्रदर्शनी में भी ऐसे ही होता है।कोई तो चित्र फाड़ने लग पड़ते हैं।आर्य समाजी कितना हंगामा करते हैं।यह तो अभी ही इनका दयानंद आया था।जैसे मच्छर जनमते हैं और मरते रहते हैं।वैसे ही इनका भी होता है।कोई ताकत ही नहीं।सिर्फ हंगामा करने की ताकत है।थोड़े टाइम के हैं।झाड़ में दिखाना चाहिए तुम्हारा पार्ट ही क्या है?तुम्हारे में ताकत ही कहां है?एक–दो जन्म लिए हैं।मच्छरों सदृश चले जावेंगे।तुम बच्चे तो कितना उंच बनते हो।वहां कब अकाले मृत्यु नहीं होती है।ओम।